T.D.C-'I'

Psy- 2nd Paper

Date

Page

PSYCHODYNAMIC MODEL
OR
SPYCHOANALYTIC THEORY

मनोगतिकी मॉडल या मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

व्यहार की व्याख्या मे मनोगतिकी दृष्टिकोण एक अत्यंत महत्वपूर्ण विचारधारा माना जाता है। इस विचारधारा की स्थापना 'सिगमण्ड फ्रायड' द्वारा कि गई। सरासन एव सरासन (2000) के अनुसार - मनोगतिकी दृष्टिकोण इस अभिग्रह पर आधारित है, कि चिन्तन एवं संवेग व्यहार के प्रमुख निर्धारक है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मनोगतिकी विचारधारा की मान्यता है कि प्रकट होने वाला व्यहार किसी न किसी सीमा तक अन्त: मानसिक प्रक्रियाओ या आंतरिक घटनाओ का परिणाम है।

फ्रायड का मत रहा है कि व्यहार को समझने के लिए इसके पूर्वक तथा इससे सम्बंधित चिंतन (विचार) का विश्लेषण आवश्यक है और उन विचारो (चिन्तनो) को समझने के लिए व्यक्ति के गहन संवेगो एवं भावो की जाँच भी की जानी चाहिए। यद्यपि चिन्तन या भावो का प्रत्यक्ष प्रेक्षण संभव नही है। फिर भी बाह्य व्यहार के आधार पे उनके बारे मे अनुमान लगाया जा सकता है। फ्रायड के विचारधारा से उपचार की सभी विधियाँ किसी न किसी सीमा तक प्रभावित है। फ्रायड का नैदानिक मनोविश्लेषण आज बहुत उपयोग मे नही है फिर भी इसके मूल तत्वो एवं मानसिक प्रक्रियाओ के सिद्धांत ने मनोचिकित्सा के क्षेत्र को व्यापक रूप मे प्रभावित किया। मनोगतिकी सिद्धातो में आपस मे असामान्यता भी है, परंतु कुछ बाते उभयनिष्ठ भी है जैसे :-

1. इस सिद्धांत की मान्यता है कि वर्तमान व्यहार अतीत के अनुभवो पर आधारित होते है। अर्थात, अतीत ही वर्तमान का स्वरूप तय करता है।

(2) इसमें अचेतन पर विश्वास व्यक्त किया गया है अर्थात अचेतन मन जिसके बारे में हमें बोध नहीं वह व्यहार को प्रभावित करता है। हम ऐसे अनेको व्यहार करते है जिसके कारणो कि हमे जानकारी नही है।

(3) इस सिद्धांत का एक उद्देश्य यह भी है कि व्यहार के अज्ञात या अचेतन कारणो का पता लगाया जाये, ताकि व्यक्ति को कठिनाई से मुक्त कराया जा सके।

(4) प्राचीन मनोविश्लेषणवादी (फ्रायड) वर्तमान व्यहारिक समस्याओ के लिए बचपन के अनुभवो को अधिक महत्व देते है।

(5) परंतु कुछ अन्य उपागमो मे व्यहार सम्बन्धी समस्याओ के लिए व्यक्ति एवं अन्य लोगो के बीच सम्बन्धो पर भी बल डाल दिया जाता है।

SEX DISORDER

इस प्रकार की लैंगिक विकृति मे काम का उद्देश्य (aim of sex disire) बदल जाता है, अर्थात व्यक्ति लैंगिक पात्र के साथ बीभत्स तरीको द्वारा विशिष्ट प्रकार के लैंगिक सुख प्राप्त करता है। यौन विकृति के इस वर्ग के अन्तर्गत निम्नलिखित मुख्य रूप आते है –

(क) परपीडन - (Sadism)
(ख) आत्मपीडन या स्वपीड़न (Masochism)
(ग) अंग- प्रदर्शन (Exihibitionism)
(घ) नग्न दर्शन - रति (Voyeurism or Scopophilia)
(ङ) विलिंगी वस्त्रधारण रति (Transvestism)
(च) पुरूष एवं स्त्री अति कामुकता (Satyriasis and Nymphomania)

(क) **परपीडन** → यौन विकृति के रूप मे व्यक्ति अपने लैंगिक पात्र को पीड़ा (Pain) पहुँचाकर लैंगिक आनन्द प्राप्त करता है। इसमे उसका उद्देश्य संभोग करना नहीं होता, अपितु पीडा या कष्ट पहुचाना होता है। इस विकृति के व्यक्ति निर्दयी हो जाता है और अपने प्रेमपात्र को निर्दयतापूर्वक पीड़ा पहुचाता है।

इससे ग्रस्त व्यक्ति समलिंगी (Homosexual) या विषमलिंगी (Heterosexual) दोनो प्रकार का हो सकता है। यह प्रेमी तथा प्रेमिका को दांतो से काटता है, नाखून से नोचता है, नंगी हालत मे कोडे से मारता है और कभी-कभी सधारण परिस्थिति मे लैंगिक पात्र की हत्या कर देता है। इसका मुख्य कारण हीनता की भावना, स्नायु तनाव, ग्रन्थियो मे दोष, आक्रमक प्रवृति है।

(ख) आत्मपीडन या स्वपीडन -> इद्देश्य संबधी विकृति का यह रूप परपीड़न के ठीक विपरित है। इस विकृति से ग्रस्त व्यक्ति अपने आप को ही कष्ट पहुँचाकर लैंगिक आनंद प्राप्त करता है। समाजिक दृष्टिकोण से स्वपीडन का विशेष महत्व नही है, लेकिन मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसका बहुत अधिक महत्व नही है। स्वपीडन की प्रवृति औरतो मे अधिक देखी गई है। इस विकृति के भी तीन रूप है।

1. कामुक स्वपीडन - मे व्यक्ति स्वंम कष्ट सहने में लैंगिक सुख प्राप्त करता है वह लैंगिक पात्र को मारने, नोचने, दाँत काटने इत्यादी का निर्देश देते है। इसमे उन्हे आनंद प्राप्त होता है।
2. स्त्रैण स्वपीडन मे केवल स्त्रियो मे पाया जाता है। इस विकृति से ग्रस्त स्त्रियाँ तरह-तरह से कष्ट पाकर सुख प्राप्त करती है।
3. नैतिक स्वपीडन की विकृति से पीडित व्यक्ति मे लैंगिक भाव नही पाया जाता है इसमे कष्ट सहने में आत्मसंतुष्टि होती है। लगातार कई सप्ताहो तक उपवास करने, काटो पर सोने, एक पैर पर खडा होने से उन्हे आनंद की प्राप्ति होती है।

(ग) अंग प्रदर्शन रति -> अंग प्रदर्शन भी एक प्रकार का यौन विकृति ही है। इसमे व्यक्ति अपने अंगो (Sex Organs) को दूसरे के सामने प्रदर्शन करके आनंदित होता है। प्राय: स्त्रि या पुरूष किसी न किसी रूप मे अपने यौन गुप्तागो का प्रदर्शन करके लैंगिक सुख प्राप्त करते है।

(घ) नग्न दर्शन रति -> नग्न दर्शन रति मे व्यक्ति दूसरे को नंगा (Nude) और संभोग करते हुए देखकर लैंगिक सुख प्राप्त करता है। कुछ लोग अपने गोपनिय अंगो को नंगा करके देखकर आनंदित होते है। इस विकृति के

अनेक कारण हैं जिनमे बाल्यावस्था की आदतों की पुनरावृति वाहियाकरण चिंता, संभोग द्वारा यौन आनंद प्राप्त करने की अयोग्यता इत्यादी मुख्य कारण हैं।

(ङ) विलिंगी वस्त्रधारण रति → इस प्रकार की विकृति मे पुरुष विपरित लिंगी वस्त्र धारण करके यौन आनंद का अनुभव करता हैं। पुरूष स्त्रियो के कपडे पहनकर तथा स्त्रियाँ पुरूषो के कपडे पहनकर और उनके अनुकूल व्यहार, रहन सहन वर्ताव आदी करके लैंगिक सुख प्राप्त करते हैं।

(च) पुरूष एवं स्त्रि अति कामुकता → अति कामुकता एक असामान्य यौन प्रणोदन हैं। जो पुरूष इस विकृति से ग्रस्त होते हैं वे सदा संभोग की इच्छा रखते हैं। संभोग के पश्चात भी वे संतुष्ट नही होते और पुन! संभोग की इच्छा से ग्रसित रहते हैं। ऐसे लोगो को कामातुर (Promiscuous) की संज्ञा दी जाती हैं। इनमे कामुक प्रवृति इतनी अधिक प्रबल रहती है, कि वे सदा अपनी कामपिपासा की तुष्टि से ही संबंध रखते हैं। इसलिए वे अपने यौन सहभागी (Sex Patner) के प्रति वास्तविक प्रेम का प्रदर्शन न कर केवल अपनी काम पिपासा की संतुष्टि का साधन समझते हैं। अति कामुकता स्त्रियो मे भी पाया जाता हैं। वे भी इसी प्रकार की मनोवृति से ग्रसित रहती हैं।

इस प्रकार लैंगिक विकृति का कारण एवं स्वरूप स्पष्ट हो गया।